Dr.Narendra Pratap Palit
Associate Professor
Dept. Of Geography
Maharaja College,Ara

M.A.Sem 1. Geography paper 3

Topic-अतिवादी भूगोल(Radical Geography)

भूगोल के अध्ययन में कालान्तर में कई विचारधाराएं समाहित होती रही हैं 1960 के दशक में आर्थिक क्षेत्रों में नए क्रान्तिकारी विचार प्रस्फूटित होने लगे। उन्हीं क्रान्तिकारी विचारों को कुछ भूगोल वेत्ताओं ने रेडिकल भूगोल कहा ।पूंजीवादी व्यवस्था से सर्वत्र असन्तुष्टि थी । 1970 के दशक में मात्रात्मक विश्लेषण और स्थानिक विश्लेषण के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में अनेक विचारधाराएं जैसे व्यावहारिक विश्लेषण, मानवीय कल्याण आदि भूगोल की सम्कल्पनाएँ आई ।इसी में क्रान्तिकारी या रेडिकल भूगोल भी एक है। यह क्रान्तिकारी भूगोल मार्क्स विचारधारा से प्रभावित है,लेकिन इसका विकास समाजवादी देशों के बजाय पूंजीवादी देश यूएसए में हुआ। पूंजीवादी व्यवस्था जो असन्तुष्ट थी ।सामाजिक विचारों के सन्दर्भ में परम्परागत चिन्तन एवं विधि तन्त्र में मार्क्सवाद की नई दृष्टि का उदय हुआ ।इस विचारधारा के विकास में "एन्टीपोड" पत्रिका तथा क्लार्क विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान था।डेविड हार्वे और प्रोफेसर पीट व्यक्तिगत रूप से इस विचारधारा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया ।क्रान्तिकारी या अतिवादी भूगोल ने भौगोलिक चिन्तन में एक नए दृष्टिकोण का समावेश किया । इस सिद्धान्त में मानव - वातावरण सम्बन्ध ,उत्पादक व्यवस्था ,आर्थिक विषमता जैसे महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़े जा सकते हैं।

व्यावहारिक भूगोल से अतिवादी भूगोल इस अर्थ में भिन्न है कि यह मानव दृष्टिकोण ,इच्छा ,व्यवहार ,अनुभूति आदि से सम्बन्धित प्रश्नों को समाहित करने से ही सन्तुष्ट नही होता बल्कि प्रक्रियाओं को समझना चाहा है। अतिवादी भूगोल वेत्ताओं के विचार अति गम्भीर हैं । यह वैकल्पिक नियम भी प्रस्तुत करता है। विचारकों द्वारा स्थापित नियम वैज्ञानिक नियमों पर आधारित होने के बावजूद अतिवादी भूगोल वेत्ताओं द्वारा सर्वव्यापक नही माना गया है। अतिवादियों के अनुसार बदलते सामाजिक सन्दर्भ में उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व भी बदलता है जिसके कारण सामाजिक नियमों का भी अवश्य परिवर्तन होगा ।डेविड हार्वे ने कहा है कि--"The essential difference between positivism and radical Geography is that positivism simply seeks to understand the world where as Radical Geography seeks to change it."

मानवतावादी तथा कल्याणकारी भूगोल से इस अर्थ में यह भिन्न है कि यह दृष्टिकोण तत्कालिक तन्त्र का विरोध करने के साथ ही क्रान्तिकारी सिद्धान्त तथा क्रान्तिकारी क्रियाकलापों में विश्वास करता है।

अतिवादी भूगोल का विकास

अतिवादी भूगोल का विकास यूएसए में उस समय हुआ ,जब अमरीकी समाज में वियतनाम युद्ध के बाद पराजय के कारण निराशा ,सामाजिक विषमता एवं अन्याय ,जातीय तनाव तथा गरीब सुविधाजीवी अमेरिकन के प्रति सत्ताधारियों के नकारात्मक दृष्टिकोण तथा मार्क्सवाद के प्रति उदासीनता का वातावरण व्याप्त था। प्रो पीट के अनुसार अतिवादी भूगोल का विकास स्थापित संस्थाओं की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ जो आरम्भ में इसका विरोध करना चाहता था ।1970 के शुरू में इस आलोचना ने मार्क्सवादी आधार को अपना लिया ,जिसका उद्देश्य अतिवादी भूगोल का विकास करना था। यह भूगोल सिर्फ यह बताना नही चाहता था कि क्या घटित हो रहा है,वरन उसे बदलना चाहता था। आरम्भ में अतिवादी भूगोल का दृष्टिकोण उदारवादी था। जब तत्कालीन अतिवादी मॉडलो के प्रति अन्य भूगोलवेत्ता प्रश्न उठाने लगे ,तब अतिवादी भूगोल वेत्ताओं ने आलोचनात्मक विकास का रुख अपनाया ।अब अतिवादी भूगोलवेत्ता तत्कालीन तकनीकी एवं सिद्धान्तों के प्रति कठोर आलोचना एवं परिवर्तन का रूप अपनाने लगे हैं।

अतिवादी भूगोल के दृष्टिकोण

अतिवादी भूगोल की पहचान तीन स्तरीय विश्लेषण से की जा सकती है-

(i) दृश्यता का स्तर या परा संरचना

(ii) प्रक्रिया का स्तर या अधःसंरचना

(iii) आवश्यकता का स्तर या गहरी संरचना

अतिवादी चिंतन का आधार भौतिकता है। इसका तर्क है कि अधःसंरचना के अंतर्गत आर्थिक प्रक्रियाएं आती हैं। अधिकांश अतिवादी चिंतक पूंजीवादी उत्पादक व्यवस्था के अंतर्गत क्रियाशील प्रक्रियाओं पर अपना ध्यान केंद्रित किया है। अतिवादी चिंतक उन प्रक्रियाओं की पहचान या खोज करना चाहता है जो अधः संरचना में क्रियाशील होते हैं।

अतिवादी दृष्टिकोण के 4 आधारभूत अवयव हैं --(1) प्रत्यक्षवादी(positivistic) जिसमें आचारवादी भूगोल एवं मानवतावादी भूगोल की आलोचना की गई है।

(2)सामान्य सैद्धांतिक रूप रेखा को प्रस्तुत करना जिसमें अनुभाविक क्रियाकलापों का निर्धारण हो सके (3) कुछ ऐसे कार्य जिससे पता चलता है कि व्यक्ति एक संरचनात्मक व्यवस्था में कार्य करता है। (4) विस्तृत अनुभाविक कार्य जिससे एक संरचनात्मक ढांचे के अंतर्गत मानव भूगोल की विषय वस्तु के विशेष तथ्यों को समझा जाता है।

अतिवादी भूगोल में समाज के विकास पर जोर दिया गया।उसके अनुसार समाज ऐतिहासिक विकास के क्रम में पाषाणकाल ,नवपाषाण काल ,सामंतवाद ,पूंजीवाद ,समाजवाद के बाद साम्यवाद की व्यवस्था की ओर अग्रसर है। इन अवस्थाओं के पूर्ण होने में 10000 वर्ष से अधिक लगा है। समाज की संरचना में अनेक परिवर्तन आए हैं, जिसे सामाजिक एवं आर्थिक निर्माण कहा गया है। यह ऐतिहासिक भौतिकवाद की भौतिक संकल्पना है। यह अर्थतंत्र एवं विचारधारा से संबंधित सामाजिक घटनाक्रम एवं प्रक्रियाओं की संपूर्णता को दर्शाता है।

अतिवादी भूगोल मात्रात्मक तकनीक तथा स्थानिक विश्लेषण द्वारा निर्मित वैज्ञानिक नियमों को सर्वकालिक नहीं मानता क्योंकि यह नियम एक निश्चित समाज की अवस्था को दर्शाता है,जबकि सामाजिक व्यवस्था में सामयिक रूप से लगातार परिवर्तन होता रहता है। इस बदलते सामाजिक संदर्भ में सामाजिक नियमों में भी बदलाव आता है। अतिवादी भूगोल तत्कालिक सभी सिद्धांतों एवं नियमों को एकाकी मानता है क्योंकि यह पूंजीवादी समाज के संदर्भ में दिया गया है। अतिवादी भूगोलवेत्ता अभी विकसित देशों द्वारा चलाई गई आर्थिक नीति को "डंकल अर्थव्यवस्था "मानते हैं। वे डब्ल्यूटीओ के अनेक नियमों को विकासशील एवं निर्धन देशों के विपरीत मानते हैं ।जैसे डब्ल्यूटीओ के अनुसार भारत अपने किसानों को अनुदान नहीं दे सकता है।सामाजिक सिद्धांतों का निर्माण कालजयी अध्ययन को समाहित किए बिना पूरा नहीं हो सकता। यदि अतिवादी विचारधारा को मान लिया जाए तो तत्कालीन सभी भौगोलिक सिद्धांत विवाद के कटघरे में खड़े हो जाएंगे।

अतिवादी भूगोल यद्यपि सामाजिक नियमों को समझने में एक वैकल्पिक आधार अवश्य प्रस्तुत किया है,लेकिन भूगोल स्थानों का विज्ञान है। स्थानिक विश्लेषण द्वारा प्राप्त प्रारूप का भूगोल में विशिष्ट स्थान है। कुछ विद्वानों ने कालिक विश्लेषण के आधार पर अतिवादी भूगोल की आलोचना की है। कालिक विश्लेषण पर अधिक जोर देने के कारण यह इतिहास के निकट पहुंच जाता है,जबकि भूगोल स्थानिक विश्लेषण का विज्ञान है। यह निर्विवाद सत्य है कि भूगोल में भ्रांतिकरण एवं प्रत्यक्षवादी अध्ययन के कारण भूगोल जिस प्रकार यांत्रिक दृष्टिकोण अपनाते हुए सामाजिक आधार खो रहा था ,उसे फिर से पटरी पर लाने में अतिवादियों ने भी सराहनीय कार्य किया है।